शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 1; जूलाई-दिसंबर, 2020; पृष्ठ संख्या : 01-11

मनोविज्ञान एवं जैनेन्द्र कुमार और भबेंद्र नाथ शइकीया की कहानियाँ

जयश्री काकति

शोध-सार

साहित्य की विधाओं में कहानी एक अन्यतम विधा है। साहित्य समाज का दर्पण है। बदलते समाज के साथ साहित्य की विषयवस्तु में भी बदलाव आता है। उसी के साथ साहित्य लेखन की शैली में भी परिवर्तन होता है। समाज के परिवर्तन के साथ-साथ मानव जीवन में जो परिवर्तन होता है, वही साहित्य की विषयवस्तु होने लगता है। कहानीकार समाज तथा मानव जीवन की हरेक वस्तु पर नजर रखते हुए उसे कहानी का रूप देते हैं। कहानीकार मानव जीवन के सुख-दुख, हर्ष-आनन्द सभी छोटी-बड़ी घटनाओं को आत्मसात करके कहानी की रचना करते हैं। फलस्वरूप कहानी में मानव जीवन और मानव मन के विविध पक्ष प्रतिफलित होते हैं। किसी भी विषय पर मानव द्वारा दिये गए सिद्धांत और उस बात पर मनुष्य द्वारा किए जाने वाले आचरण मनुष्य के सामने विविध समस्याएँ खड़े करते हैं। मनुष्य का आचरण उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। इसी कारण मनुष्य की मानसिकता का अध्ययन अथवा मानव मन का विश्लेषण एक महत्वपूर्ण विषय है। जैनेन्द्र कुमार हिंदी साहित्य के प्रेमचन्दोत्तर युग के मनोवैज्ञानिक कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं तथा भबेंद्र नाथ शइकीया असमीया साहित्य के कहानी-जगत के अनमोल रत्न हैं। दोनों ने अपनी कहानियों में मनुष्य तथा समाज के हरेक पहलू को विषयवस्तु बनाया है। दोनों ही कहानिकारों ने बाल मनोविज्ञान के विविध पहलुओं को सुंदर रूप से अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। दोनों दो अलग-अलग क्षेत्रों के होने पर भी मनोवैज्ञानिक विश्लेषण में दोनों में समानता देखी जा सकती है।

बीज शब्द : *मनोविज्ञान, कहानी, जैनेन्द्र कुमार, भबेंद्र नाथ शइकीया।*

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण है। समाज व्यक्ति से बनता है। व्यक्ति के प्रत्येक कार्य को समझने के लिए उसके मानसिक स्वरूप को समझना जरूरी है। साहित्य और मनोविज्ञान दोनों ही व्यक्ति से संबन्धित हैं। साहित्यकार अपनी रचना के लिए मनोविज्ञान की सहायता लेते हैं। कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से विभिन्न पीढ़ियों की मनःस्थिति को चित्रित करते हैं। भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक व्यवहार अलग होते हैं। ये सब साहित्य में प्रतिफलित होते हैं। मनुष्य विकासशील प्राणी है। बढ़ती उम्र के साथ-साथ मनुष्य के शारीरिक-मानसिक, सामाजिक आदि रूपों में विकास होता रहता है, जिसके प्रभाव से उसके सोच-विचार, कार्य-व्यापार आदि में भी परिवर्तन होता है। साथ ही अपने आस-पास के परिवेश, वातावरण पर भी व्यक्ति की मानसिकता निर्भर करती है। एक परिस्थिति में एक बुजुर्ग व्यक्ति जो कार्य करेगा, वह एक बच्चा या युवा नहीं भी कर सकता है।

जैनेन्द्र कुमार और भबेन्द्र नाथ शइकीया दोनों ही नाम अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। जैनेन्द्र कुमार हिंदी साहित्य के विशाल समुद्र के प्रेमचन्दोत्तर युग के मनोवैज्ञानिक कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं, तो भबेंद्र नाथ शइकीया असमीया साहित्य के रामधेनु-युग के कहानी-जगत के अनमोल रत्न हैं। समसामयिक दोनों साहित्यकारों ने मानव तथा समाज के प्रायः सभी पहलुओं को समेट कर विभिन्न आयु के स्त्री तथा पुरुषों के मनोजगत का चित्रण अपनी कहानियों के माध्यम से किया है।

किसी भी विषय पर मानव द्वारा दिये गए सिद्धांत और उस बात पर मनुष्य द्वारा किए जाने वाले आचरण मनुष्य के सामने विविध समस्याएँ खड़ा करते हैं। मनुष्य का आचरण उसकी मानसिक स्थिति पर निर्भर करता है। इसी कारण मनुष्य की मानसिकता का अध्ययन अथवा मानव मन का विश्लेषण सर्वदा महत्वपूर्ण विषय है।

प्रस्तुत अध्ययन की पद्धति तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक है। अध्ययन में असमीया ,हिन्दी एवं अँग्रेजी भाषा के ग्रन्थों का सहारा लिया गया है।

असमीया भाषा में स उच्चारणवाले दो वर्ण हैं – 'च' और 'छ'। असमीया में 'स' के लिए कोमल ह का उच्चारण होता है। असमीया के 'स', 'च' और 'छ' इन तीनों वर्णों के लिए हिंदी लिप्यंतरण में क्रमशः 'स', 'च' और 'छ' रखे गए हैं। हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण चलते हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' होता है। असमीया 'य' के लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' रखा गया है ।

विश्लेषण

कहानी गद्य लेखन की एक विधा है। उन्नीसवीं सदी में गद्य की एक नई विधा का विकास हुआ, जिसे कहानी के नाम से जाना जाता है। अँग्रेजी में इसे 'स्टोरी' और असमीया में इसे 'चुटि गल्प' कहा जाता है। कहानी आधुनिक गद्य की एक अत्यंत लोकप्रिय विधा है।

हिंदी कहानियों का विकास आधुनिक युग में हुआ, लेकिन कहानी कहने तथा सुनने की परम्परा प्राचीन काल से ही प्रचलित थी। इसके अंतर्गत उपनिषद की कहानी आदि आती हैं। सामान्य रूप में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति अथवा समूह को किसी घटना का वर्णन करना ही कहानी है। समय के साथ-साथ इसका रूप बदलता गया।

मनोविज्ञान

मनोविज्ञान शब्द अंग्रेजी शब्द 'Psychology' का पर्यायवाची है। 'Psychology' शब्द ग्रीक भाषा के 'Psyche' और 'logos' शब्द से बना है। 'Psyche' का मतलब 'मन' अथवा 'आत्मा' है, अंग्रेजी में इसे 'mind' और 'soul' कहते हैं और 'logos' का मतलब 'विज्ञान' है। साधारण रूप से मनोविज्ञान को 'मन का विज्ञान' समझा जाता था। बाद में मनोविज्ञान के लिए एक नई परिभाषा निकाली, जिसमें मन की जगह आत्मा का विज्ञान माना गया। अर्थात जिस विज्ञान के जरिए आत्मा पर क्रमबद्ध रूप से आलोचना की जा सके, उसी विज्ञान को मनोविज्ञान कहा जाने लगा। प्रारम्भिक समय में मनोविज्ञान से सम्बन्धित सभी आलोचनाएँ दार्शनिक दृष्टि से की गयी थीं। बाद में कुछ मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा शोध के आधार पर मनोविज्ञान की नई परिभाषा दी गयी। उन मनोवैज्ञानिकों ने मनोविज्ञान को 'चेतन का विज्ञान' माना। मनोविज्ञान की इस परिभाषा से भी सभी मनोवैज्ञानिक एकमत नहीं है। प्रख्यात मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने मानव के आचरण के लिए अवचेतन मन का अध्ययन पर अधिक महत्व प्रदान किया। पर यह परिभाषा भी विवादस्पद है। किसी मानवीय समस्या पर गहराई से बुद्धिपूर्वक विचार करना, उसे कारण-कार्य की शृंखला में बांधकर देखने की चेष्टा करना, उसके क्रिया-व्यापारों तथा गुण-धर्मों का पता लगाना ही मनोविज्ञान है। अनुशासित और व्यवस्थित विचार परम्परा ही विज्ञान की आत्मा है। मनोविज्ञान भी इसी तरह मस्तिष्क के व्यवस्थित तथा अनुशासित प्रयोग का पक्षपाती है। सरल भाषा मे कहें तो मन को मापने का माध्यम ही मनोविज्ञान है। मन के भावों, विचारों और चंचलताओं का विश्लेषण है मनोविज्ञान। मनोविज्ञान मनोभावों की व्याख्या प्रस्तुत करता है। मानव की प्रत्येक क्रिया को

समझने के लिए उसके मानसिक स्वरूप को समझना जरूरी है। मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है, जो क्रमबद्ध रूप से मानसिक प्रक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

मनोविज्ञान और साहित्य का सम्बन्ध

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपनी विविध आवश्यकताओं के लिए मनुष्य दूसरे व्यक्तियों से, समूहों से, समुदायों से अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है। व्यक्ति के व्यवहार के साथ समाज का सम्बन्ध होता है। व्यक्ति के आपसी सम्बन्ध उनके परस्पर व्यवहार पर निर्भर करते हैं। मनुष्य के विचारों, व्यवहारों एवं क्रियाओं का प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। व्यक्ति का व्यवहार सदा एक समान नहीं होता है। एक ही व्यक्ति एक ही समय तथा परिस्थिति में अलग-अलग लोगों के साथ अलग-अलग व्यवहार करता है। उसके विचार, भाव तथा व्यवहार विविध परिस्थितियों से प्रभावित होते रहते हैं ।

साहित्य का सम्बन्ध मानव मन से है। साहित्यकार द्वारा प्रस्तुत चरित्र पर साहित्यकार के मनोविज्ञान का प्रभाव पड़ता है। मनोविज्ञान मनुष्य की आशा- आकांक्षा, सुख-दुख, हँसी-खुशी का विश्लेषण करता है। साहित्य और मनोविज्ञान दोनों का मूल विषय मानव मन है। मनोविज्ञान का सम्बन्ध वास्तविक जगत से होता है। साहित्य इसी वास्तविक जीवन को कलात्मक ढंग से प्रस्तुत करता है।

साहित्यकार किसी कहानी, उपन्यास अथवा नाटक के रचयिता होते हैं। साहित्यकार घटना के आधार पर विभिन्न चरित्रों का निर्माण करते हैं। परिस्थिति के अनुरूप पात्रों के चरित्र-चित्रण अलग-अलग होते हैं। साहित्यकार इस क्षेत्र में मनोविज्ञान का सहारा लेते हैं और दूसरी तरफ मनोविज्ञान किसी चरित्र का विश्लेषण करने के लिए सहायक होता है। साहित्यकार मनोविज्ञान के सहारे रचना करते हैं और मनोविज्ञान साहित्य में चित्रित पात्रों तथा स्वयं लेखक की मनोदशा का विश्लेषण करता है। इस तरह साहित्य और मनोविज्ञान एक दूसरे के पूरक तथा सहायक होते हैं।

हिंदी कहानी में मनोविज्ञान और जैनेन्द्र कुमार

हिंदी साहित्य के प्रेमचंद का युग कहानी के विकास के उत्कर्ष का युग है। प्रेमचंद के आगमन से हिंदी का कथा साहित्य समाज-सापेक्ष सत्य की और मुड़ा। प्रेमचंद के समय तक मनोवैज्ञानिक धारा नामक कोई धारा नहीं थी। पर उनके द्वारा अपने अंतिम समय में रचित 'पूस की रात' और 'कफन' कहानियों में मनोवैज्ञानिकता झलकती है। 'पूस की रात' तथा 'कफन' में उनके बदले हुए दृष्टिकोण तथा नई संरचना को देखा जा सकता है। मन का गहन अंतर्द्वन्द्व प्रसाद की कहानी का मूलाधार है।

'आकाशदीप' इसका जीवंत उदाहरण है।

सन् 1927-28 ई. में जैनेन्द्र ने कहानी लिखना आरम्भ किया। उनके आगमन के साथ हिंदी कहानी का नया उत्थान शुरू होता है। जैनेन्द्र की कहानियों में एक विशिष्ट प्रकार के जीवन दर्शन की खोज है। प्रसाद की कहानियों में भी मन का गहरा द्वंद्व चित्रित हुआ है। पर वह द्वंद्व जैनेन्द्र से भिन्न नहीं है। जैनेन्द्र मन को टटोलते हुए सत्यान्वेषण का प्रयास करते हैं। जैनेन्द्र के अनुसार कहानी एक भूख है, जो निरंतर समाधान पाने की कोशिश करती है। यद्यपि प्रेमचंद की कहानी से मनोवैज्ञानिक धारा शुरू हो चुकी थी, तथापि उस समय की तथा प्रेमचंद की कहानियों में मनोविज्ञान से ज्यादा आदर्श और यथार्थ पर जोड़ दिया गया था। जैनेन्द्र ने मनोवैज्ञानिक धारा को विशेष रूप दिया। स्वतंत्र यौन-सम्बन्धों के प्रति जागरूकता लाने का श्रेय मनोविज्ञान को जाता है। मनोविज्ञान के सिद्धांतों ने व्यक्तिवाद को प्रश्रय दिया है। इसने स्त्री को भी एक व्यक्ति का दर्जा दिया है। इस क्षेत्र में जैनेन्द्र ने प्रथम प्रयास किया था। इस क्षेत्र में इलाचन्द्र जोशी, अज्ञेय, अश्क, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद के बाद हिंदी कहानी को नवीन आयाम देनेवालों में जैनेन्द्र प्रमुख हैं। प्रेमचंद के साथ उनका निकट सम्पर्क होने पर भी उन्होंने उनका अनुसरण नहीं किया, वरन अपने लिए नयी दिशा की खोज की। उन्होंने कहानी को 'घटना' के स्तर से ऊपर उठाकर 'चरित्र' और 'मनोवैज्ञानिक सत्य' पर लाने का प्रयास किया। डॉ॰ नगेन्द्र के अनुसार-

> जैनेन्द्र की एक और खूबी यह रही कि उन्होंने कथावस्तु को सामाजिक धरातल से समेटकर व्यक्तिगत और मनोवैज्ञानिक भूमिका पर प्रतिष्ठित किया। उनकी 'हत्या' (1927) शीर्षक कहानी में इन प्रवृत्तियों की झलक देखी जा सकती है। (नगेन्द्र 2008: 583)

एक कहानीकार के रूप में जैनेन्द्र ने कई रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। इनमें कहानी लेखन की प्रतिभा प्रारम्भिक समय से ही थी। इनकी कहानियों की कुल संख्या 120 से अधिक है और सब कहानियाँ 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' शीर्षक दस पृथक-पृथक भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं। इन कहानियों में जैनेन्द्र ने विषयगत विस्तार की दृष्टि से मानव जीवन के प्रायः सभी पक्षों को उभारा है। 'एक रात', 'स्पर्धा', 'जयसंधि', 'नीलम देश की राजकन्या', 'दो चिड़ियाँ', 'वातायन', 'फाँसी', 'कथामाला', 'पाजेब' आदि इनके कहानी-संग्रह हैं। जैनेन्द्र की कहानियों का मुख्य विषय नारी है। इन कहानियों में जैनेन्द्र ने व्यक्ति-मन की शंकाओं, प्रश्नों

तथा गुत्थियों का अंकन किया है। डॉ॰ नगेन्द्र के शब्दों में-

> जैनेन्द्र प्रेमचंद से इस अर्थ में विशिष्ट हैं कि वे कहानी कहने से भागते हैं। घटनाओं को प्रायः छोड़ते जाते हैं या उनकी जगह संकेतों से काम लेना पसंद करते हैं। अनुभूति की गहरी प्रेरणा उनकी कहानियों का वैशिष्ट्य प्रदान करती है- यहाँ तक कि कथानक, पात्र, परिस्थिति आदि की विरलता भी तीव्र अनुभूति के संस्पर्श से अत्यन्त प्रभावोत्पादक हो जाती है। (नगेन्द्र 2008: 583)

मानव-मन के द्वन्द्वों के चित्रण में जैनेन्द्र सिद्धहस्त हैं। दार्शनिक चिन्तन उनके व्यक्तित्व की विशेषता है। जैनेन्द्र का साहित्य सद्भाव और मन की संवेदनाओं से पूर्ण है। जैनेन्द्र मानव-मन की संवेदनाओं एवं मनोवृत्तियों के विश्लेषक थे और यह रूप उनके कथा-साहित्य से लेकर चिन्तन साहित्य तक मिलता है। मनुष्य के मन का जितना सूक्ष्म चित्रण जैनेन्द्र के साहित्य में मिलता है, अन्यत्र बहुत कम है। जैनेन्द्र में फ्रायड के सिद्धांतों का प्रभाव है। मार्मिक दृश्य का चयन, एक ही दृश्यों या घटना के सहारे कथानक का निर्माण करके देशकाल के संकलन का निर्वाह, असाधारण परिस्थितियों में पड़े मानवों का सूक्ष्म मनोविश्लेषण, विचारात्मकता और यत्र-तत्र वक्र-अस्पष्ट भाषा जैनेन्द्र की कहानी कला की विशेषताएँ हैं।

असमीया कहानियों में मनोविज्ञान और भबेंद्र नाथ शइकीया

असमीया साहित्य में सन् 1889 से 1939 तक के समय को आधुनिक युग माना जाता है। सन् 1889 में कोलकाता से प्रकाशित 'जोनाकी पत्रिका' के प्रतिष्ठा के साथ-साथ असमीया साहित्य में आधुनिक युग अथवा रोमांटिक युग का आरंभ हुआ है, ऐसा कहा जा सकता है। पर यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि इसके पहले भी असमीया साहित्य का भण्डार समृद्ध था।

इसी रोमांटिक युग में ही असमीया कहानी का विकास हुआ। इस क्षेत्र में सबसे पहला नाम आता है साहित्यरथी लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा का। उसी समय से विभिन्न युगों का अतिक्रमण करते हुए असमीया कहानी आज इस अवस्था में पहुँची है।

महाभारत, रामायण आदि पर आधारित दादी माँ की कहानियों के सहारे असमीया कहानी ने अपना पहला कदम रखा, ऐसा कहा जा सकता है। उसके बाद यूरोप की औद्योगिक क्रांति, डार्विन के विकास-सिद्धान्त, फ्रायड के मनोविज्ञान तथा अन्य भिन्न-भिन्न वाद-तत्व मानव-जीवन में जो जिज्ञासा लायी , उन सबने भी असमीया कहानी के विकास में ईंधन का काम किया। समसामयिक विभिन्न भाषाओं में सृजन होनेवाली कहानियों के

साथ असमीया कहानी के परिचय ने भी असमीया कहानी को नया मोड़ दिया है, ऐसा कहा जा सकता है।

सन् 1929 में कोलकाता से प्रकाशित 'आवाहन पत्रिका' ने असमीया कहानी में एक नये युग को जन्म दिया था। आवाहन-युग में भी फ्रायदीय मनोविज्ञान के आधार पर कहानी लिखी गयी थी। पर रामधेनु-युग में ही इसकी सक्रियता अधिक देखी जाती है। कुछ लेखक जा. पल सार्त्र के अस्तित्ववाद के आधार पर भी कहानी लिखने लगे थे। मनुष्य अपने जीवन काल में सामाजिक-आर्थिक-सामाजिक राजनैतिक स्थितियों से कोई परित्राण न पाकर एवं यथार्थ से प्रतारित होकर फ्रायडीय धारणाओं के प्रति आकर्षित हुए थे।

सामाजिक,आर्थिक-सामाजिक, राजनैतिक दृष्टि से देखे तो यह समय एक उल्लेखनीय समय है। द्वितीय विश्वयुद्ध की भयानक स्थिति, युद्धों की रणशैली, हिरोशिमा-नागासाकी की भयानक घटना, उसी के साथ भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, देश-विभाजन, संघर्ष आदि ने प्रायः सबके सोच-विचार, अनुभूति को प्रभावित किया था। असमीया जातीयतावाद की धारा, सर्वभारतीय जातीयतावाद की धारा और वैज्ञानिक वस्तुवाद की समाजतांत्रिक धारा तथा फ्रायड के मनोविज्ञान का प्रभाव असमीया कहानीकारों में पड़ने लगा था।

आवाहन-युग की कहानियों की मुख्य विषयवस्तु नर-नारी के बीच के संपर्क का विश्लेषण थी। इसमें संदेह नहीं है कि इन संपर्कों का चित्रण करते समय कहानीकार द्वारा जाने-अनजाने किंचित मात्र ही सही मानव-मन की चिरंतन भाव-अनुभूतिओं तथा समाज-जीवन की झलक दिखलायी गयी है। आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था के प्रसार के साथ-साथ तथा एक वर्ग की शिक्षित महिलाओं के आगमन से उनकी आधुनिक चिंता-भावना ने नारी-पुरुष के संपर्क में प्रभाव डाला था। उसी का प्रतिफलन कहानी-साहित्य में होने लगा था। त्रैलोक्यनाथ गोस्वामी, लक्ष्मीधर शर्मा, रमा दास, बीणा बरुवा, उमाकांत शर्मा आदि इस धारा के उल्लेखनीय कहानीकार हैं। उमाकांत शर्मा के कहानी संकलन 'घूरणीया पृथिवी बेका पथत' (=गोल दुनिया के टेढ़े रास्ते पर) में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से चरित्र चित्रण करने की कोशिश की गयी थी। 'घूरणीया पृथिवीर बेका पथत' कहानी जब 'बाँही पत्रिका' में प्रकाशित हुई थी तब संपादकीय में लिखा था -

असमीया कथा-साहित्यत चाइकॉलजिर नतुन आलोकसम्पात। घूरणीया पृथिवीर मानुहर मनर बाटबोरो माटिर बाटबोरर दरेइ एकाबँका ।(बरगोहाञिँ 2017: 105)

(भावार्थ: असमीया साहित्य में साइकॉलजी का नया आलोकपात हुआ है। गोल पृथिवी के आदमियों के मन का रास्ता भी मिट्टी के रास्ते की तरह टेढ़ा-मेढ़ा है ।)

पुरानी समाज-व्यवस्था के कारण उत्पन्न सोच-विचारों के बीच जो थोड़ी बहुत आधुनिकता को स्थान मिला था, उसी से अपने मन में छिपे गुप्त भाव और गुप्त आकांक्षा सामने आयी थी, वही कहानीकारों ने कहानियों में प्रतिफलित किया था। ऐसा भी हो सकता है कि कोई विशिष्ट उद्देश्य सामने न रखते हुए कहानीकार मनुष्य के मन में झाकने लगे थे और उसी आधार पर चरित्रों का आचार-आचरण निरीक्षण करके अपनी अनुभूतियों को कोमल और सुकुमार भाषा में व्यक्त करते थे।

चौथे के दशक में घटित विभिन्न घटनाओं ने सबको आलोड़ित किया था। एक तरफ युद्ध था तो दूसरी तरफ इसीके परिणाम स्वरूप हो या अन्य कई कारणों से हो रहे मानवीय मूल्यों का पतन था। विभिन्न राजनैतिक दर्शन, विशेषकर साम्यवादी आदर्श के कारण लोग जिस स्वर्णिम समाज का स्वप्न देखने लगे, उसीके फलस्वरूप समाज-सचेत व्यक्तियों के साथ-साथ कहानीकारों के मन में भी संशय और प्रत्याशा के एक मानसिक जगत का जन्म हो उठा था। उसका प्रतिफलन असमीया साहित्य में हुआ था। उस समय के प्रायः कहानीकारों ने मनोविश्लेषण के जरिए व्यक्ति के मनोजगत पर विचरण करते हुए बहुत सारी सार्थक कहानियाँ लिखी थीं। परवर्ती दशक में भी इसका विस्तार तीव्र गति से होने लगा। सौरभ कुमार चलिहा, बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य, योगेश दास, होमेन बरगोहाञिँ, भबेंद्र नाथ शइकीया, लक्ष्मीनंदन बरा, स्नेह देवी आदि इस धारा के उल्लेखनीय कहानीकार हैं।

असमीया साहित्य में मनोवैज्ञानिक कहानी की धारा अथवा व्यक्ति चेतना केन्द्रिक अन्तर्मुखी आधुनिकतावादी साहित्य के सन्दर्भ में हेम बरुवा द्वारा कही गयी बात ऊपर उल्लेखित विश्लेषण का प्रतिनिधित्व करती है-

आधुनिक जगतत एफाले सतेज राजनीति, नानाबिध सामाजिक आनुष्ठानिक समस्या आरु आनफाले अवचेतन मनोजगत, फ्रयेडर चाइकॉएनालाईछिछ्। एने साहित्यत मानवर अंतरात्मार चिंताधारार गति-प्रगतिर समावेश सरह, नायक-नायिकार बहिर्द्वन्द्वतकै अंतर्द्वन्द्वर प्रभाव ब्यापक। (बरगोहाञिँ 2017:288)

(भावार्थ- आधुनिक जगत की एक ओर राजनीतिक समस्या, भिन्न तरह की सामाजिक आनुष्ठानिक समस्याएँ और दूसरी ओर अवचेतन मनोजगत, फ्रायड के साइको एनालिसिस (मनोविश्लेषण)। इस तरह के साहित्य में मानव की अंतरात्मा की सोच की गति-प्रगति का समावेश अधिक होता है, नायक-नायिका के बहिर्द्वंद्व से अंतर्द्वंद्व का प्रभाव व्यापक होता है ।)

यहाँ इस बात का उल्लेख कर सकते हैं कि पाश्चात्य मार्क्स के अर्थनैतिक दर्शन और फ्रायड के मनोविज्ञान का प्रभाव असमीया साहित्य में एकसाथ पड़ा था। फलस्वरूप असमीया प्रगतिवादी साहित्य और अन्य आधुनिक साहित्य के बीच अपने आप में विरोध रह गया है, जो पाश्चात्य साहित्य में नहीं है। असमीया कहानी की ओर जब हम ध्यान से देखते हैं तो पाते हैं कि एक ही कहानीकार की कहानियों में फ्रायड के प्रभाव से मानसिक अपराध प्रवणता, मनुष्य की काम-वासना और यौन-जीवन का प्रतिफलन देखे जाते हैं। हो सकता है इस तरह से उन्होंने सामाजिक अन्याय-कलुषता के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा की है।

भबेंद्र नाथ शइकीया असमीया साहित्य जगत के एक प्रतिष्ठित कहानीकार हैं। 'रामधेनु' युग के कहानीकारों में वे जनप्रिय साहित्यकार थे। सन् 1963 में प्रकाशित 'प्रहरी' उनका पहला कहानी-संकलन है। उसके बाद क्रमानुसार 'बृन्दावन' (1965), 'गह्बर' (1969), 'सेन्दूर' 'शृंखल' (1975), 'तरंग' (1979), 'एइ बन्दरर आबेलि' (1988) उनके कहानी-संकलन हैं। भबेंद्र नाथ शइकीया की कहानियों की विशेषता है कि कहानियों के अंत में भी पाठकों के मन में जिज्ञासा बनी रहती है। जैसे लेखक आगे और कुछ कहेंगे या पाठक यह सोचने के लिए विवश हो जाते हैं कि आगे क्या हुआ होगा।

निष्कर्ष

असमीया तथा हिंदी कहानी साहित्य पर दृष्टि डालने से यह सामने आता है कि दोनों ही भाषाओं के कहानियों का विकास आधुनिक काल में हुआ, यद्यपि दोनों क्षेत्रों में कहानी सुनने तथा बोलने की धारा बहुत पुरानी है। असमीया साहित्य में कहानी के विकास में जोनाकी पत्रिका का उल्लेखनीय योगदान है। साथ ही लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा को असमीया कहानी का जनक कहा जाता है। उसी तरह हिंदी कहानी के विकास में प्रेमचंद का युग महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कहानी-साहित्य आदर्शवाद की ओर मुड़ा था। प्रेमचंद के समय तक मनोवैज्ञानिक धारा नामक कोई धारा नहीं थी। पर उनकी अंतिम समय में रचित 'पूस की रात' और 'कफन' कहानियों में

मनोवैज्ञानिकता झलकती है। उसी तरह असमीया कहानी में भी रामधेनु-युग से पहले मनौविज्ञान की बात नहीं थी। जहाँ असमीया कहानी में मनौविज्ञान की धारा रामधेनु-युग में शुरू हुई, वही हिंदी में मनौविज्ञान की धारा जैनेन्द्र से आरंभ हुई। मनोविज्ञान का सम्बन्ध वास्तविक जगत से होता है तो साहित्य इसी वास्तविक जीवन को कलात्मकता प्रदान करते हुए साहित्य का रूप देता है। भबेंद्र नाथ शइकीया की कहानियों की विशेषता है कि कहानी के अंत में भी पाठकों के मन में जिज्ञासा बनी रहती है।

जैनेन्द्र कुमार और भबेंद्र नाथ शइकीया भारत के दो भिन्न प्रांतों के कहानीकार होने के कारण उनकी रचनाओं में वैषम्य देखा जाता है, पर दोनों कहानीकारों ने मनोविज्ञान के आधार पर कहानियाँ लिखीं, अतः दोनों की कहानियों में साम्य भी मिल जाते हैं। दोनों समकालीन साहित्यकार हैं। दोनों ने विभिन्न विषयों को लेकर साहित्य की सेवा की है। हिंदी साहित्य में जैनेन्द्र कुमार और असमीया साहित्य में भबेंद्र नाथ शइकीया मनोवैज्ञानिक कहानीकार के रूप में विशेष रूप से ख्यात हैं।

ग्रंथ-सूची :

अंग्रेजी ग्रंथ :

Hurlock Elizabeth B. Developmental Psychology A Life –Span Approach.

असमीया ग्रंथ :

बरगोहाञिँ,होमेन. असमीया साहित्यर बुरंजी (छठा खंड). गुवाहाटी:आनंदराम बरुआ भाषा कला संस्कृति संस्था, 2017.

शर्मा, सत्येन्द्रनाथ. असमीया साहित्यर समीक्षात्मक इतिवृत्त. गुवाहाटी:अरुणोदय प्रकाशन, 2017.

हाजरिका, अनंत(प्रका). डॉ. भबेन्द्र नाथ शइकीयार गल्प समग्र. चतुर्थ. गुवाहाटी:बनलता प्रकाशन, 2015.

हिंदी ग्रंथ :

जैन, निर्मला (संपा.). जैनेन्द्र रचनावली(Vol.4). नई दिल्ली:भारतीय जनपीठ, 2008.

जैन, निर्मला (संपा.). जैनेन्द्र रचनावली(Vol.5). नई दिल्ली:भारतीय जनपीठ, 2008.

नगेंद्र(संपा.). हिंदी साहित्य का इतिहास. नोएडा:मयुर प्रकाशन, 2008.

संपर्क-सूत्र
प्रवक्ता, सरकारी हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
उत्तर गुवाहाटी, असम
ई-मेइल: jayashree.kakati@rediffmail.com
मोबाइल : 8638625877